The Chitransh Academic & Research
International Journal of Multidisaciplinary Reseaech
An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume1 | Issue 3 |June 2025
ISSN: 3049-303X (Online)
Website: www.thechitranshacadmic.in

मिथिलेश्वर के कथा साहित्य में चित्रित ग्रामीण जीवन की संवेदना

प्रो0 (डॉ0) रूखसाना खातून [1]

शोध निर्देशिका, प्राचार्या, कमला राय महाविद्यालय, गोपालगंज (बिहार)

चन्द्र कान्त [2]

शोधार्थी, हिन्दी विभाग,जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा (बिहार)

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Received: ***01.06.25***

*Accepted:****28.06.25***

Published: ***30/06/25***

Keywords: मिथिलेश्वर, ग्रामीण जीवन, गरीबी, शिक्षा, सामाजिक समस्याएँ।

ABSTRACT

यह शोधपत्र प्रसिद्ध कथाकार मिथिलेश्वर के साहित्य में चित्रित ग्रामीण जीवन की यथार्थपूर्ण संवेदना का विश्लेषण करता है। लेखक ने ग्रामीण भारत की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्थितियों को अत्यंत संवेदनशीलता और सजीवता के साथ अपनी कहानियों और उपन्यासों में प्रस्तुत किया है। मिथिलेश्वर के साहित्य में गाँवों की गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, चिकित्सा और यातायात जैसी मूलभूत समस्याओं का मार्मिक चित्रण मिलता है। उनके पात्र यथार्थ के धरातल पर जूझते हुए दिखाई देते हैं, जहाँ शिक्षा की कमी, चिकित्सा सुविधाओं का अभाव और रोजगार की अनुपलब्धता ग्रामीण जीवन को असहज बनाती है। उन्होंने 'युद्धस्थल', 'यह अंत नहीं', 'झुनिया', 'बीच रास्ते में', और 'पुल पर' जैसी रचनाओं में ग्रामीण समाज के संघर्षशील जीवन, उनके दुख-दर्द, सपनों और टूटती उम्मीदों को दर्शाया है। इस अध्ययन में यह स्पष्ट होता है कि आजादी के दशकों बाद भी ग्रामीण भारत अनेक अभावों और असमानताओं से ग्रस्त है। मिथिलेश्वर के साहित्य ने इन सच्चाइयों को उजागर कर पाठकों को ग्रामीण समाज की ओर सोचने और बदलाव के लिए प्रेरित किया है। यह शोध ग्रामीण यथार्थ के गंभीर चित्रण के माध्यम से सामाजिक चेतना और परिवर्तन की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

प्रस्तावना

हमारे साहित्यकार प्रत्येक सामाजिक यथार्थ से अवगत है। वर्तमान समय में ग्रामीण संस्कृति में आ रहे उथल-पुथल को वे समझते हैं। इसलिए उनकी रचनाओं में समाज की वास्तविकता का अंकन देखने को मिलता है। मिथिलेश्वर ग्रामीण परिस्थितियों से जुड़े कथाकार हैं। इसलिए उनकी रचनाओं में वह हर एक परिवर्तन देखने को मिलता है, जो ग्रामीण समाज से संबंधित है। उन्होंने ग्रामीण जीवन के सामाजिक समस्याओं के साथ गाँव के बदलते मूल्यों का भी चित्रण किया है। ग्रामीण समुदाय के लोग मुख्य रूप से कृषि पर आधारित होती है। सभी ग्रामवासियों प्रकृति के निकट होते हैं और मिलजुलकर रहते हैं। डॉ. भरत सगरे ग्रामीण समुदाय के बारे में कहते हैं ''भारतीय समाज ग्रामों में बसा हुआ है। भारतीय ग्राम आज भी परंपरागत पद्धति से जीवन यापन कर रहा है। जीवन का आधार खेती, मजदूरी या कुटीर उद्योग ही हैं।''1 ग्रामीण समुदाय का विकास कई प्रकार के विषम परिस्थितियों में होता है। कई जगहों पर ग्रामीण लोग अभावग्रस्त जिन्दगी जीने के लिए विवश हैं। मिथिलेश्वर ने अपने उपन्यास और कहानियों के जरिए ग्रामीण चेतना के विभिन्न पक्षों को दिखाने का प्रयास किया है। जिनको निम्नांकित रूप में देखा जा सकता है।

ग्रामीण समाज में अनेक तरह की समस्याएँ दिखाई देती हैं. जैसे शिक्षा की समस्या, चिकित्सा की समस्या, यातायात से संबंधित समस्याएँ, और असुरक्षा की भावना आदि। इन समस्याओं और असुविधाओं के कारण ग्रामीण जीवन सुखमय नहीं है। शहरीय समुदाय की तरह ग्रामीण समुदाय में सब सुविधाएँ नहीं हैं। गाँव में प्राथमिक जरूरतों की पूर्ति के लिए भी सुविधाएँ नहीं हैं। मिथिलेश्वर ने अपने कथा साहित्य में गाँव की अभावग्रस्त जिन्दगी का यथार्थ चित्रण किया है। मनुष्य के जीवन में शिक्षा का विशेष महत्व है। शिक्षा से ही मनुष्य का विकास होता है। अशिक्षा के कारण गाँव के लोग हमेशा पिछड़े रह गये हैं। ग्रामीण विकास के लिए विद्यालय का योगदान महत्वपूर्ण है। लेकिन गाँव के विद्यालयों की दशा बहुत दयनीय है। इसलिए ग्रामीण लोग शिक्षा से वंचित रहते हैं। इसका यथार्थ चित्रण मिथिलेश्वर के 'युद्धस्थल' उपन्यास में किया है।

'युद्धस्थल' उपन्यास एक विधवा नारी रामशरण बहू की कहानी है। रामशरण बहू के गाँव भरतपुर के विद्यालय की अवस्था बहुत दयनीय है। गाँव में बच्चों को पढ़ने के लिए पाठशाला का निर्माण किया गया है। लेकिन पाठशाला में सिर्फ दो कमरे है और एक बरामदा है। उपन्यास में पाठशाला की हालत के बारे में इस तरह वर्णन किया है।

''उसका छप्पर उजड़ चुका है, दीवारें नूनी लगने की वजह से झड़ रही हैं। तथा खिड़कियाँ और दरवाजे कभी के गायब हो चुके हैं। बच्चे या तो इसी कमरे में बैठकर पढ़ते हैं या बरामदे में। लेकिन थोड़ी-सी धूप

बढ़ जाने और हल्की-सी आँधी-पानी आ जाने पर भी गुरूजी को पाठशाला बंद करने का बहाना मिल जाता है।''2 गाँव में बच्चों को पढ़ने के लिए अच्छे विद्यालय नहीं हैं। इस प्रकार स्कूलों की दयनीय स्थिति के कारण गाँव के बच्चे शिक्षा से वंचित हैं। गाँव में उच्च शिक्षा का कोई प्रबंध नहीं है, इसलिए गाँव के बच्चे शिक्षा पाने के लिए शहर में जाते हैं। मिथिलेश्वर के 'वे जब गाँव आये' कहानी में ग्रामीण विद्यालय की दयनीय स्थिति का चित्रण किया गया है।

शहर से अखबार में काम करने वाले एक व्यक्ति गाँव के बारे में लिखने के लिए गाँव आता है। गाँव का एक ग्रामीण उनकी मदद के लिए आता है। वो अपने गाँव के विद्यालय के बारे में कहता है ''इस टीले के पास ये जो उजली-उजली दो-तीन कोठरियाँ नजर आ रही हैं न, यः गाँव के बच्चों की पाठशाला है। इसमें पाँचवी कक्षा तक की पढ़ाई होती है। इसके बाद की पढाई के लिए इस गाँव से बाहर जाना पड़ता है।3 ग्रामीण विद्यालयों की अवस्था बिगड़ रही है, इस कारण से बच्चों को अच्छी शिक्षा नहीं मिलती है।

गाँव और शहर की तुलना में गाँव ही स्वच्छ हैय लेकिन ग्रामीण समाज में असुविधाओं के कारण लोग शहर को गाँव से अधिक मानते हैं। कोई रोग हो जाय तो, अच्छे डॉक्टर अस्पताल नहीं हैं, इसलिए इलाज के लिए ग्रामीणों को शहर की शरण लेनी पड़ती है। मिथिलेश्वर के 'यह अंत नहीं' उपन्यास में गाँव में चिकित्सा सुविधा के अभाव की समस्या को दर्शाया है। गाँव में अस्पताल न होने के कारण गाँव के लोग शहरों में जाकर इलाज कराते है। उपन्यास में अगम खवासडीह गाँव के जमींदार श्रवणसिंह का छोटा पुत्र है। अगम के तीन दोस्त शहर से गाँव घूमने के लिए आते हैं। एक रात को उनमें से एक दोस्त के पेट में जोरों से दर्द होता हैं। अनपच और पेट की गड़बड़ी का दर्द समझकर गाँव के डॉक्टर उसे दवा देते हैं, लेकिन कोई फायदा नहीं होता है। दर्द बढ़ता ही जाता है। जब दर्द में वह छटपटाने और चीखने-चिल्लाने लगता है तो उसी रात अगम और उसके दोस्त उसे शहर के एक बड़े अस्पताल में ले जाते हैं। अगम गाँव की चिकित्सा के बारे अपने घर की नौकरानी चुनिया से कहता है: ''यही अंतर गाँव और शहर में है चुनिया। यहाँ रहने और खाने-पीने का काफी सुख है; लेकिन राग-बिमारी और आगे की पढाई का कोई इंतजाम नहीं। अगर यहाँ अच्छी पढ़ाई का इंतजाम होता तो मैं काहे शहर जाता? बीमारी के अवसर पर यहीं इलाज हो जाता तो फिर शहर की जरूरत ही नहीं पड़ती।''4 गाँव में अस्पताल न होने के कारण गाँव के लोग परेशान हैं। मिथिलेश्वर के 'एक गाँव सूखाग्रस्त' कहानी में गाँव के चिकित्सा की समस्या को बहुत अच्छी तरह उजागर किया है। गाँव में इलाज की कोई व्यवस्था नहीं है कहानी में इस बात को स्पष्ट करते हुए एक ग्रामीण कहता है ''मेरे यहाँ रोगियों के लिए कोई अस्पताल नहीं प्राथमिक चिकित्सा गृह भी नहीं।''5

Corresponding Author: chandrakantdahibhata@gmail.com

गाँवो में यातायात की अच्छी सुविधाएँ नहीं हैं। गाँवों में अच्छे सड़कों की कमी के कारण यातायात में बहुत बड़ी समस्या उत्पन्न होती है। गांवों में अच्छे पक्की सड़क और सवारी न होने के कारण ग्रामीण लोगों को बहुत कष्ट सहने पड़ते हैं। मिथिलेश्वर के 'एक गाँव की अंत कथा' कहानी में पक्की सड़कों की अभावों के बारे में उल्लेख किया गया है। इस कहानी में लेखक ने अपने गाँव की अंत कथा बतलायी है। इनका गाँव भोजपुर जिला के औसत गाँव है, जो शहर के प्रभावा और प्रदूषण से बचा है। लेखक कहानी में गाँव के सड़क के बारे में लिखते है: ''सड़क बनी क्या है, थोड़ी-बहुत मिट्टी डालकर गिट्टी के टुकडे बिखेर दिये गये हैं। बसें इसे निरन्तर खंधारती जा रही हैं। विधिवत् इसका निर्माण होगा, यह बात हम वर्षों से सुनते आ रहे हैं।''6 इन असुविधाओं के कारण गाँवों की दशा बड़ी दयनीय है। गाँव में लोगों की अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन भी नहीं है। गाँव में अस्पताल, अच्छी शिक्षा, पक्की सड़क न होने के कारण गाँव के लोग परेशान हैं। गाँव की सब परिस्थितियों को देखते हुए सुधार अत्यंत आवश्यक है।

गरीबी मानव के विकास में सबसे पहली और बड़ी बाधा है। गरीबी के कारण मनुष्य अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ है। अनेक मुसीबतों को झेलते हुए दयनीय जीवन बिताने के लिए विवश ग्रामीणों का चित्रण मिथिलेश्वर ने अपने कथा साहित्य में किया है। आजादी के इतने वर्षों के बाद भी ग्रामीण समाज में कोई सुधार नहीं आया है। उनकी आर्थिक स्थिति बहुत दयनीय है। गरीबी के कारण ग्रामीणों को दैनिक जीवन में अनेक यातनाओं को सहना पड़ता है। इसका मार्मिक चित्रण मिथिलेश्वर जी ने 'झुनिया' उपन्यास में किया है। उपन्यास की मुख्य पात्र झुनिया के पिता हरिहर खेतों में कटनी का काम करते है। खेतों में कई बार उनसे विषैले साँपों को घुसते निकलते देखा है। फिर भी वह अपनी रोजी-रोटी के लिए खेतों में कटनी के लिए जाते हैं। गरीबी और भूख आदमी को कमजोर बनाती है। उपन्यास में हरिहर अपनी पेट की विवशता के बारे में कहता है: ''लेकिन कटनी करने से कहाँ कोई बाज आता है। पेट का अजगर इन साँपों से ज्यादा भयाभय है। उसकी क्रूर मांग हर भय को दूर कर देती है। लोग हँसिया लेकर खेतों में कूद पड़ते हैं।''7

गरीबी मनुष्य को बेबस और लाचार बना देती है। ग्रामीण समाज में आर्थिक विषमता के कारण मनुष्य को अनेक समस्याओं से झूजना पड़ता है। कपड़ा मानव के शरीर ढकने का अत्यावश्यक साधन है। अमीर लोग अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार कपड़ा खरीद लेता है। लेकिन गरीब लोग अपनी गरीबी के कारण अच्छा कपडा खरीदने में असमर्थ है। 'बीच रास्ते में' कहानी में मिथिलेश्वर ने ऐसे गरीब दो भाइयों का चित्रण किया है। कहानी में दो शिक्षित बेरोजगार युवकों के पास अच्छी धोती और कमीज भी नहीं है। दोनों भाइयों

Corresponding Author: chandrakantdahibhata@gmail.com

के पास नया कपड़ा खरीदने के लिए पैसे नहीं है। छोटा भाई नरेन फटी हुई लुंगी पहनकर गाँव में घूमता है। नरेन रोज नए कपड़े खरीदने के लिए पिता से झगड़ते हैं। नरेन की बातों को सुनकर उसका बड़ा भाई कहता है: ''बाबू के सामने कपड़ों के लिए प्रस्ताव रखना वह एकदम बेकार समझता है। इस महंगाई के जमाने में उनके लिए बाबू दो जून रोटी जुटा देते हैं. यह क्या कम है? कपड़ों के लिए बाबू पैसे कहाँ से जुटाएँगे? बाबू के पास है ही क्या? उनके पास भी तो सिर्फ एक ही धोती है।''8 इस प्रकार मिथिलेश्वर ने अपने कथा साहित्य में धन के अभाव से झूजते ग्रामीण लोगों की यथार्थ चित्रण किया है। ग्रामीण समाज में गरीबी के कारण लोग भोजन, कपड़ा, शिक्षा, स्वास्थ जैसी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाते हैं। इस सामाजिक यथार्थ के प्रति हमें जागृत करने का कार्य लेखक ने किया है। हमारे देश में बेरोजगारों की संख्या अधिक है। बेरोजगारी की समस्या ग्रामीण लोगों के लिए बहुत ही भयंकर समस्या बनी हुई है। पढे-लिखे ग्रामीण युवकों को गाँव में काम नहीं मिलता है। बेरोजगारी के कारण ग्रामीण युवकों क हालत दिन-ब-दिन बिगड़ती जा रही है। शिक्षा होते भी कोई काम नहीं मिलता तो ग्रामीण युवक निराश हो जाता है। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए चोरी, डकैती आदि करते हैं। मिथिलेश्वर के श्पुल परश् कहानी में बेरोजगारी के कारण एक ग्रामीण शिक्षित युवक अपनी परिस्थितियों से तंग आकर छोरी, डकैती करते हैं। छोरी करना उसे पसंद नहीं है, लेकिन नौकरी के अभाव में उसे चोरी करने के लिए मजबूर कर देता है। उसके मन तो ऐसे कार्यों से अलग करने के लिए प्रेरित करते हैं। लेकिन आर्थिक कठिनाईयों के कारण उसे जगुआ गिरोह में शामिल होकर चोरी, डकैती करने के लिए विवश करता है। कहानी में लेखक उसकी स्थिति स्पष्ट करते हुए लिखते हैं, ''उसके जैसे एक शिक्षित बेरोजगार युवक को. जिसके पास खेती करने के लिए जमीन भी नहीं, क्या करना चाहिए? उसकी पढ़ाई के चलते माँ-बाप कर्जे से लद गए हैं। पढ़ाई समाप्त करने के बाद नौकरी के लिए अर्जियाँ देते देते वह थक गया हैं पर कहीं से कोई बुलावा नहीं आया।''9 इस प्रकार बेरोजगारी ग्रामीण युवकों को अपराध कार्य की ओर प्रेरित कर रही है।

ग्रामीण लोगों का प्रधान व्यवसाय खेती है। खेती पर ही उनकी जीविका चलती है। लेकिन आज हम देख रहें हैं कि कसती में काम करने वाले मजदूरों को रोजगार नहीं मिलता है। इसलिए वे लोग रोजगार पाने के लिए शहर की ओर जा रहे हैं। मिथिलेश्वर के 'यह अंत नहीं' उपन्यास में मजदूरों की बेरोजगारी को व्यक्त किया हैं पहाड़पुर गाँव में काम की बहुत कमी है, इसलिए उपन्यास में जोखन शहर में राजमिस्त्री का काम करता है। उपन्यास में लेखक गाँवों की बेरोजगारी को व्यक्त करते हुए लिखते है: 'शहर के आसपास के गाँवों के मजदूर काम की तलाश में दिन के अपने खाने की पोटली अपने अँगोछे के छोर में बाँधकर कंधे पर

लटकाए सुबह सात बजे से ही उस अड्डे पर जुटने लगते थे। आठ बजते-बजते तो विभिन्न गांवों और विभिन्न दिशाओं में जुटे मजदूरों का मेला वहाँ लग जाता था।10 इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि गाँवों में काम की कमी के कारण वहाँ के लोग रोज मजदूरी के लिए शहर की ओर जाते हैं। ग्रामीण समाज में प्रतिदिन बेरोजगार लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है। इस प्रकार मिथिलेश्वर ने अपने कथा साहित्य में वर्तमान ग्रामीण परिस्थितियों का स्पष्ट चित्रण किया है। गरीबी, बेरोजगारी, असुविधाओं आदि की वजह से ग्रामीण समाज बदतर जिन्दगी जीने के लिए विवश है। आजादी के इतने सालों के बाद भी ग्रामीण जीवन अभावग्रस्त है। मिथिलेश्वर अपनी कथाओं में वर्तमान समय के गाँव में बदलते चेहरे को रेखांकित किया है। इस ओर हमारा ध्यान खींचने का प्रयास किया है, और उसमें वे सफल हुए हैं।

संदर्भ ग्रंथ:

1. डॉ. भरत सगरे हिंदी आंचलिक उपन्यासों में दलित जीवन पृ. 106
2. मिथिलेश्वर युद्धस्थल पृ. 94
3. मिथिलेश्वर माटी की महक धरती गाँव की पृ.124
4. मिथिलेश्वर यह अंत नहीं - पृ. 26
5. मिथिलेश्वर तिरिया जनम पृ. 196
6. मिथिलेश्वर भोर होने से पहले पृ.208
7. मिथिलेश्वर झुनिया - पृ. 32
8. मिथिलेश्वर बाबूजी पृ. 33
9. मिथिलेश्वर तिरिया जनम पृ. 46
10. मिथिलेश्वर यह अंत नहीं- पृ. 148

Corresponding Author: chandrakantdahibhata@gmail.com